

Date
28/04/2020

B.Ed=IIInd

Sub - "Work Education, Gandhiji's Nai Talim
& Community Engagement."

जॉन ड्यूवी के अनुसार विद्यालय \rightarrow ड्यूवी ने परम्परागत विद्यालयों का विरोध किया। वे प्रारम्भिक शिक्षा के

बजाय काम करने सीखने पर बल देते थे। उनका मानना था कि विद्यालय में बालक वास्तविक जीवन व सामूहिक जीवन की शिक्षा नहीं प्राप्त करता जिससे उसका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है। उनके अनुसार विद्यालय विद्यालय एक मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकता है। मनोवैज्ञानिक आवश्यकता इसलिए है क्योंकि वह बूढ़े जीवन की शिक्षा देने की व्यवस्था करता है। ड्यूवी ने विद्यालय को समाज का लघु रूप माना है जिस प्रकार व्यक्तिगत विकास समाज में रहकर ही संभव है इसी प्रकार छोटे बालकों का विकास विद्यालय के लघु समाज द्वारा ही संभव है।

ड्यूवी के विचारों के आधार पर विद्यालय के सामान्यतः

निम्न कार्य हो जाते हैं -

- I. बालक के विद्वत ज्ञान के विकास के लिए विभिन्न प्रकार के वातावरण का संयोजन करना और उसके समंजस्य स्थापित करना।
- II. विद्यालय को समाज का लघु रूप देना।
- III. विविध क्रियाओं का समन्वय कर बालकों की क्रियाशीलता का विकास करना।
- IV. सहयोग एवं सामाजिकता की भावना का विकास करना।
- V. स्वावलम्बन की भावना को उत्पन्न करना।
- VI. विद्यालय को जीवन का रूप देना।

गतिशील समाजोपजन होता है।

शिक्षार्थी \Rightarrow प्रत्येक बालक को अपनी रुचि और आवश्यकताओं के समाज सम्मत विकास की पूरी-पूरी स्वतंत्रता देने का प्रबल पक्षधर हैं। उनका मत है कि शिक्षा की योजना बनाते समय बालकों की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

शिक्षक \Rightarrow इपूर्वी ने अपनी शिक्षा योजना में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसके अनुसार विद्यालय में शिक्षक बालक को समाजोन्मुख करने के लिए एक विशेष व्यक्ति हैं वह समाज का सेवक है। उसका कार्य बालक को क्रियाशील बनाना है और विद्यालय में ऐसा सामाजिक वातावरण उत्पन्न करना है जिससे बालक के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास हो सके।

अनुशासन \Rightarrow इपूर्वी ने दण्डात्मक अनुशासन का विरोध किया क्योंकि इससे बालक में घृणा व अरुचि पैदा होती है। इसके अनुसार अनुशासन सामाजिक होना चाहिए जिससे सामूहिक एवं सहकारी जीवन का सिद्धांत प्रबल किया जा सके। इपूर्वी का मानना था कि यदि विद्यालय का सम्पूर्ण कार्य बालकों की स्वाभाविक प्रवृत्ति और रुचि के अनुसार ही हुआ हो तो अनुशासन की समस्या उत्पन्न नहीं होगी।